गुरु नानक – सबद ६३

भरमे भाहि न विझवै जे भवै दिसंतर देस ॥

राग सिरिराग, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २२

भरमे भाहि न विझवै जे भवै दिसंतर देस ॥
अंतर मैल न उतरै घ्रिग जीवण घ्रिग वेस ॥
होर कितै भगत न होवई बिन सतिगुर के उपदेस ॥१॥
मन रे गुरमुख अगन निवार ॥
गुर का कहिआ मन वसै हउमै त्रिसना मार ॥१॥ रहाउ ॥
मन माणक निरमोल है राम नाम पत पाइ ॥
मिल सतसंगत हरि पाईऐ गुरमुख हरि लिव लाइ ॥
आप गइआ सुख पाइआ मिल सललै सलल समाइ ॥२॥
जिन हरि हरि नाम न चेतिओ सु अउगुण आवै जाइ ॥
जिस सतगुर पुरख न भेटिओ सु भउजल पचै पचाइ ॥
इहु माणक जीउ निरमोल है इउ कउडी बदलै जाइ ॥३॥
जिंना सतगुर रस मिलै से पूरे पुरख सुजाण ॥
गुर मिल भउजल लंघीऐ दरगह पत परवाण ॥
नानक ते मुख उजले धुन उपजै सबद नीसाण ॥४॥२२॥

सार: संदेह और संशय मानव अनुभव का स्वाभाविक हिस्सा हैं। संशय हमारे पुराने विश्वासों को चुनौती देता है जबकि संदेह हमें सवाल करने के लिए प्रेरित करता है। नई जानकारी को स्वीकार करने, अपने विचार बदलने, निर्णय लेने और अच्छे संबंध बनाने की क्षमता बाधित हो सकती है। इसलिए, हमें संदेह और संशय का उपयोग अपने अहंकार को दूर करने और वास्तविक अनुभवात्मक ज्ञान प्राप्त करने के लिए करना चाहिए। यह दृष्टिकोण बिना हमारे व्यक्तिगत विकास और आपसी जुड़ाव में रुकावट डाले आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देता है ।

भरमे भाहि न विझवै जे भवै दिसंतर देस ॥
संदेह की आग कभी नहीं बुझती चाहे कोई दूर की यात्रा ही क्यों न कर ले।

अंतर मैल न उतरै धि्रग जीवण धि्रग वेस ॥
जब तक हमारे भीतर अहंकार की गंदगी साफ़ नहीं हो जाती तब तक हम जो भी जीवन जियें चाहे वह धार्मिक वेश में ही क्यों न हो उसका कोई वास्तविक मूल्य नहीं है।

होर कितै भगत न होवई बिन सतिगुर के उपदेस ॥१॥
अज्ञानता को जागरूकता में बदलने वाले ज्ञान के अलावा कोई दूसरा रास्ता सच्ची भक्ति की ओर नहीं ले जा सकता। (१)

मन रे गुरमुख अगन निवार ॥
हे मन, उस ज्ञान के साधक बनो जो नकारात्मक विचारों की आग को शांत कर सकता है।

गुर का कहिआ मन वसै हउमै त्रिसना मार ॥१॥ रहाउ ॥
जब ज्ञान के माध्यम से प्राप्त अंतर्दृष्टि को मन द्वारा समझा और आत्मसात किया जाता है तब यह अहंकार और अथक लालसा को मिटा देता है। (१)(विराम)

मन माणक निरमोल है राम नाम पत पाइ ॥
मन एक अनमोल रत्न की तरह है, सृष्टि की एकता की पहचान से उसका मूल्य और विश्वसनीयता बढ़ जाता है। उसी तरह जैसे किसी रत्न को चमकाने से उसकी चमक और मूल्य और बढ़ जाए।

मिल सतसंगत हरि पाईऐ गुरमुख हरि लिव लाइ ॥
सर्वत्रता के साधकों में एकता का सार साकार होता है। जो लोग अज्ञान को जागरूकता में बदलने वाले विवेक की तलाश करते हैं वह अपनी चेतना को सृष्टि की एकता के साथ जोड़ते हैं।

आप गइआ सुख पाइआ मिल सललै सलल समाइ ॥२॥
जब स्वयं का भ्रम समाप्त होता है तब शांति सहज प्रकट होती है जैसे पानी सहज रूप से पानी में विलीन हो जाता है। (२)

जिन हरि हरि नाम न चेतिओ सु अउगुण आवै जाइ ॥
जो लोग सृष्टि की एकता को याद रखने और उस पर चिंतन करने में विफल रहते हैं, वह कमज़ोर होकर लगातार पतन और प्रगति के चक्र में फंस जाते हैं।

जिस सतगुर पुरख न भेटिओ सु भउजल पचै पचाइ ॥
जो लोग संपूर्ण सृष्टि के मूल तत्व, सत्य ज्ञान से वंचित रहते हैं, वह भय और पीड़ा के जाल में फंसे रहते हैं और संसार को भयानक महासागर के रूप में देखते हैं।

इहु माणक जीउ निरमोल है इउ कउडी बदलै जाइ ॥३॥
यह अनमोल अस्तित्व एक दुर्लभ रत्न के समान है। यदि इसके वास्तविक सार पर चिंतन न किया जाए तब यह अपनी वास्तविक क़ीमत खोकर फेंकी हुई सीपी बन जाता है। (३)

जिंना सतगुर रस मिलै से पूरे पुरख सुजाण ॥
जो व्यक्ति इस जीवन के सार को समझते हैं, वह जागरूक, ज्ञानी और पूर्ण होते हैं।

गुर मिल भउजल लंघीऐ दरगह पत परवाण ॥
जो लोग संपूर्ण सृष्टि के मूल तत्व, सत्य ज्ञान से वंचित रहते हैं, वह भय और पीड़ा के जाल में फंसे रहते हैं और संसार को भयानक महासागर के रूप में देखते हैं।

नानक ते मुख उजले धुन उपजै सबद नीसाण ॥४॥२२॥
नानक कहते हैं कि जो दिव्य ज्ञान को आत्मसात करते हैं, वह सत्य के प्रकाश से दैवीय आभा बिखेरते हैं। उनके विचार और वाणी में ज्ञान की ध्वनि गूंजती है जिसका दूसरों पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। (४)(२२)

तत्त्व: गुरु नानक समझाते हैं कि ज्ञान केवल सूचना या अनुभव का संचय मात्र नहीं है; इसका वास्तविक सार यह समझने में नीहित है कि कैसे अच्छी तरह से जीना है। सच्चा ज्ञान वही है जो हमारे जीवन में सार्थकता लाए और हमें यह समझने में सहायता करे कि हम जो जानते हैं उसे

कैसे व्यवहारिक रूप से अपनाएं और उसका सदुपयोग करें। यह एक सार्थक प्रभाव के बारे में बताता है जो खुद से और दूसरों से सम्मान और स्वीकृति दिलाता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com